HISTORY-5

(3) निर्वाण (Nirwana): बौद्ध धर्म का मुख्य लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति है। निर्वाण से अभिप्राय मन की पूर्ण एवं असीम शांति की व्यवस्था है। इस व्यवस्था में मनुष्य हर प्रकार की लालसाओं से मुक्त हो जाता है और इस तरह जन्म-मरण प्रकार से छूट जाता है। महात्मा बुद्ध ने स्वयं अपने जीवन काल में निर्वाण प्राप्त किया था। निर्वाण की तुलना मनुष्य के भीतर स्वतन्त्र के आत्मभाव से की गई है।

(4) कर्म सिद्धांत (Karma): महात्मा बुद्ध कर्म के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। इनका विचार था कि मनुष्य स्वयं अपने जीवन का निर्माता है। उसे अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। मनुष्य जो बीजेगा उसे उस का वैसा ही फल मिलेगा। पिछले कर्मों के अनुसार वर्तमान जीवन के अनुसार भविष्य निर्धारित होता है। नियम सारे ब्रह्मांड में सभी पर लागू होता है।

(5) ईश्वर में अविश्वास (NO Belife in God): महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेश में ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना और न ही वे और देवताओं के पूजा करने में विश्वास रखते थे।

(6) यज्ञ, बलियों और मंत्र-उच्चारण में अविश्वास (No faith in Yajna, Sacrifices and Rituals):
महात्मा बुद्ध देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के यज्ञों, पशुओं और बलियों आदि में विश्वास नहीं रखते थे। वे मंत्रों के उच्चारण को भी व्यर्थ समझते थे।

(7) जाति प्रथा का विरोध (Opposed to Caste System):
महात्मा बुद्ध ने मनुष्य और मनुष्य के बीच समानता पर बल दिया है और भ्रातृभाव का प्रचार किया। सुत्तनिपात में लिखा है की कोई भी जन्म से ब्राह्मण या शूद्र नहीं होता वह अपने कर्मों के अनुसार ही ब्राह्मण या शूद्र बनता है। जो व्यक्ति चोरी करके अपना निर्वाह करता है, वह चोर है ब्राह्मण नहीं। महात्मा बुद्ध ने जाति प्रथा को एक सामाजिक रोग कहा है। उसके इन विचारों के कारण शूद्र और उनकी नीची जातियों के लोग बड़ी संख्या में बौद्ध धर्म को अपनाने लगे।

(8) नैतिकता पर बल (Emphasis on Morality):
महात्मा बुद्ध ने नैतिकता पर विशेष रूप पर बल दिया। उन्होंने यह उपदेश दिया है कि नैतिकता पर, शुद्ध चरित्र का होना चाहिए और अनुशासन में रह कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। उन्होंने मनुष्य को शुद्ध विचार वचन

कृषि, वाणि. और रहन-सहन का आदि की शिक्षा दी। इन्होंने मनुष्य को भोग ~~विलास~~ विलास का जीवन, नशा चोरी आदि बुरी आदतों से दूर रहने का उपदेश भी दिया।